B.A Part-1 - Paper-1

Dr. M.K. Jha.
V.S.J college
Rajnagar

Introduction to Sociogy.

संस्कृति की अवधारणा एवं विशेषताएं

संस्कृति का अभिप्राय सामाजिक परिमार्जन एवं सामाजिक प्रशिक्षण है जिसमें व्यक्ति विभिन्न विधियों, मानवीय-ज्ञान और विचार द्वारा समाज से अनुकूलन करना सीखता है। एक व्यक्ति जीवन के प्रारम्भ से ही परिवार, विद्यालय और बाहरी जगत के उन व्यवहारों को सीखना प्रारंभ कर देता है जिन्हे उसके समाज में आवश्यक समझा जाता है। E.A. Hoebel के अनुसार संस्कृति सीखी जाती ही है। अतः वह एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाती है। समाजशास्त्र के अन्तर्गत संस्कृति से तात्पर्य भौतिक और अभौतिक तत्वों की एक जटिल सम्पूर्णता है जिसे व्यक्ति समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है तथा जिसमें वह अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जैसे E.B. Tylor के अनुसार "संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा एवं ऐसी ही अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज के नाते प्राप्त करता है।" इनके परिभाषा में संस्कृति के भौतिक पक्ष पर ध्यान नहीं दिया गया है।

M.J Herskovits के अनुसार Culture is the man-made part of the environment. अर्थात "संस्कृति पर्यावरण का मानव-निर्मित भाग है।" मानव का सम्पूर्ण सामाजिक पर्यावरण संस्कृति है इस सामाजिक पर्यावरण को मानव स्वयं बनाया है।

Scanned with Cam

R. Benedict ने संस्कृति की सर्वोत्तम परिभाषा देते हुए लिखा है कि "संस्कृति एक जटिल सम्पूर्णता है जिसमें वे सभी विशेषताएँ सम्मिलित हैं जिन पर हम विचार करते हैं कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।"

संस्कृति की विशेषताएँ :-

संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ समाजशास्त्र में मान्य हैं :-

1. संस्कृति मानव निर्मित - संस्कृति मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं से निर्मित एवं विकसित होती है। अतएव मनुष्य द्वारा संस्कृति का निर्माण किया जाता है। संस्कृति मानव का अनोखी देन है इसलिए मानव को अति प्राणी (Super-organic) भी कहा जाता है।

2. संस्कृति सीखी जाती है :- Lundberg के अनुसार संस्कृति सामाजिक सीख तथा अनुभव पर आधारित है। वैसे भी संस्कृति मानव के सीखे हुए व्यवहार प्रतिमान का योग है जो सामूहिक व्यवहार द्वारा समाज में सीखी जाती है।

3. संस्कृति में हस्तान्तरित की जाता है :- संस्कृति में सीखने एवं ग्रहण करने का गुण पाया जाता है। मानव अपने नवीन पीढ़ी, भाषा, लेखन एवं संकेत के माध्यम सीखता है और अगली पीढ़ी को भी जानने के हस्तान्तरित करता रहता है।

Scanned with Cam

4. संस्कृति समूह का आदर्श होती है :-
प्रत्येक समूह अपनी संस्कृति को सर्वोत्तम समझता है क्योंकि संस्कृति भौगोलिक, सामाजिक परिस्थितियों और आवश्यकता के आधार पर निर्मित बनाया जाता है जिसमें नवाचार-आविष्कार का गुण संस्कृति को समूह का आदर्श बनाती है।

5. संस्कृति में सामाजिक गुण निहित है
संस्कृति सामाजिक सामूहिक आदतों, व्यवहारों एवं अनुभव के द्वारा समाज की जीवन-विधि का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें भाषा, धर्म, आशा जैसे सामाजिक गुण एवं क्षमता का विकास, आदान-प्रदान होता रहता है।

6. संस्कृति मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती है :-
एक संस्कृति के अन्तर्गत अनेक भाग और उपभाग होते हैं जो कि सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में संगठित रहते हैं जो पारस्परिक सम्बन्धों तथा प्रभाव के सदस्यों की आवश्यकता नवीन एवं प्राचीन आधार पर पूर्ति करते हैं। इसी आधार पर प्रकार्यवाद ने प्रकार्य की अवधारणा सामने आया है।

7. संस्कृति में सन्तुलन एवं संगठन :-
संस्कृति के उपादान में सांस्कृतिक तत्व, सांस्कृतिक संकुल- संस्कृति प्रतिमान एवं सांस्कृतिक दौर आते हैं जो संस्कृति को एक निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं फलतः संस्कृति के सभी अंगों में कार्यों में सन्तुलन एवं संगठन बना रहता है।

8. व्यक्तित्व निर्माण: संस्कृति नये मूल्यों एवं परम्परागत सीख द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण करते रहते हैं।

9. संस्कृति व्यक्ति से उच्च: संस्कृति का निर्माण व्यक्ति से नहीं बल्कि समूह से होती है अतएव एक व्यक्ति के मृत्यु के बाद संस्कृति बनी रहती है।

10. संस्कृति अंग: सावयवी:
संस्कृति का विकास व्यक्ति के मेधावी मस्तिष्क और लचकीले हाथों के कारण सम्भव हो सका है, लेकिन संस्कृति की अनुपस्थिति में यह मस्तिष्क और हाथ अपने आप पशुओं के समान कार्य करने लगते हैं। अतएव संस्कृति सावयव से उपड है।

आज कल भौतिक संस्कृति और अभौतिक संस्कृति के प्रभाव पर्यावरण एवं नवीन व्यवहार के कारण संस्कृति की विशेषताएं विस्तारित हो रही हैं।